भट्टारक वीरचन्द्र

जीवन-परिचय : सूरत-शाखा के भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति की परम्परा में लक्ष्मीचन्द्र के शिष्य आचार्य वीरचन्द्र हुए हैं। वीरचन्द्र अत्यन्त प्रतिभा सम्पन्न विद्वान थे। व्याकरण एवं न्यायशास्त्र के प्रकाण्डवेत्ता थे। छन्द, अलंकार, संगीतशास्त्र एवं वाद्यविद्या में भी वे निपुण थे।

भट्टारक वीरचन्द्र की प्रशंसा अनेक विद्धानों ने की है। भट्टारक सुमतिकीर्ति ने भी इन्हें वादियों के लिए अजेय बतलाया है।

प्राकृत पंचसंग्रह टीका में इन्हें यशस्वी, अप्रतिम विद्वान बतलाया है।

आचार्य वीरचन्द्र का कार्यकाल विक्रम सम्वत् की 17वीं शताब्दी सिद्ध होता है।

रचना-परिचय : आचार्य वीरचन्द्र संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी और गुजराती के निष्णात विद्वान थे। इनके द्वारा लिखित आठ रचनाएँ प्राप्त हैं—

1. वीरविलासफाग, 2. जम्बूस्वामीवेलि, 3. जिनान्तर, 4. सीमन्धरस्वामीगीत, 5. सम्बोधसत्ताणु, 6. नेमिनाथरास, 7. चित्तनिरोधकथा, 8. बाहुबलिवेलि।